वर्ष 1 अंक 6

शब्द वृक्ष

मुद्राराक्षस की साहित्यिक पत्रिका

RNI REGN : UPHIN/2023/85585

जुलाई- अगस्त 2024

कहानी

ढोर
अचला नागर

कोरा पन्ना..
डा0 रंजना जायसवाल

अपराजिता
हरभजन सिंह मेहरोत्रा

खोज

ज़िन्दा है ओसामा
रोमी शीराज़ मुद्राराक्षस

"लगत करेजवा में चोट...."

ज्योत्सना की जद्दन बाई पर विशेष प्रस्तुति

अचला नागर फिल्म लेखिका
व वरिष्ठ साहित्यकार

ममता कालिया, वरिष्ठ साहित्यकार

प्रबुद्ध पाठको के स्नेह तले पल्लवित होती मुद्राराक्षस की साहित्यिक पत्रिका

शब्द वृक्ष

मुद्राराक्षस की साहित्यिक पत्रिका

जुलाई- अगस्त २०२४

चित्रा मुद्गल, वरिष्ठ साहित्यकार

उद्भ्रांत पूर्व महानिदेशक, दूरदर्शन
व वरिष्ठ साहित्यकार

अगला अंक जल्द होगा आपके बीच

mudrarakshas.sahitya@gmail.com

RNI REGN : UPHIN/2023/85585

बहुत सुंदर आवरण हर अंक एक कदम आगे हार्दिक बधाई और धन्यवाद प्रिय रोमेल –

– उद्भ्रांत

प्रिय चिरंजीव रोमेल आशीर्वाद : मुद्राराक्षस उवाच के अंक प्राप्त हुए. धन्यवाद अतिकठिन मानसिकता से गुजरते हुए भी पत्रिका हाथ में फौरन ही उठा ली। पत्रिका की साज सज्जा और सामग्री सभी कुछ मनभावन है, मुद्रा भाई का रंग तो आज भी कितना समसामयिक लगता है। पत्रिका पर माह दरमाह निखार आते रहने की हार्दिक शुभकामनाएं

– अचला नागर

काफी तैयारी से अंक आ रहे हैं धीरेंद्र अस्थाना की कहानी बहुत अच्छी लगी बुआ वाली कविताएँ भी –

– ममता कालिया

रोमेल यह तुम बहुत बड़ा काम कर रहे हो मुद्रा जी हमारी स्मृतियों में जीवित है बहुत गहरे । पत्रिका को लेकर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। पत्रिका में मुद्रा और इंदिरा की तस्वीरें देख आंखें नम हो आई फेसबुक पर तुम्हारी प्रतिक्रिया तलछट का सत्य है।

– चित्रा मुद्गल

'मुद्राराक्षस उवाच' का नया नाम 'शब्द वृक्ष' बेहद पसंद आया। कहानी, कविता और लेख की रोचकता में और भी ज़्यादा इज़ाफा देखने को मिला। अगले अंक का बेसब्री से इंतेज़ार रहेगा।

– सैयद मोहम्मद हसनैन

गोपाल बागले,
भारतीय उच्चायुक्त, ऑस्टेलिया

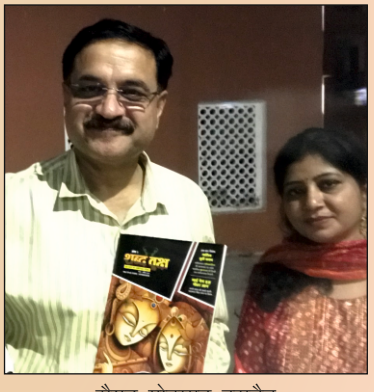

सैयद मोहम्मद हसनैन,
महानिरीक्षक, सीआरपीएफ

आशुतोष दीक्षित, एयर मार्शल,
भारतीय वायुसेना

स्वामी प्रसाद मौर्य, पूर्व कैबिनेट मंत्री
उ प्र सरकार

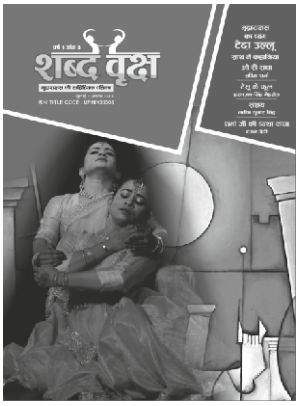

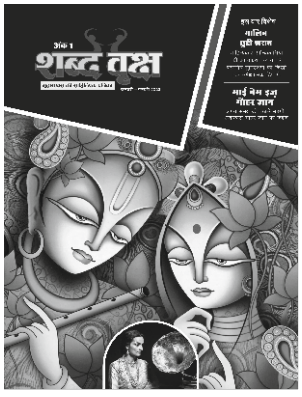

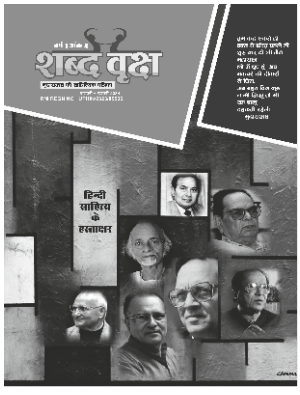

लेख भेजने व वार्षिक सदस्यता के लिये लिखें

mudrarakshas.sahitya@gmail.com

अथवा कॉल करें

9810590061

मुद्राराक्षस हिन्दी साहित्य फाउंडेशन

वर्ष 1 अंक 6

शब्द वृक्ष

मुद्राराक्षस की साहित्यिक पत्रिका

जुलाई - अगस्त 2024

RNI REGN : UPHIN85585

संपादक
रोमेल मुद्राराक्षस
ज्योत्सना

सलाहकार सम्पादक
रोमी शीराज़

मुख्य प्रबन्धक
मीनू शेरावत

आंचलिक प्रबन्धक
उत्तर प्रदेश - राजवीर रतन
दिल्ली - सबा
पटना - पवन कुमार
देहरादून - अनुज भारद्वाज
हैदराबाद - विनय श्रीनिवास
भुवनेश्वर - नव किशोर दास
रांची - रक्शितेश

कला/सज्जा सहयोग
रमन कुमार
संतोष कुमार

प्रकाशन सहयोग
मुद्राराक्षस हिन्दी साहित्य फाउंडेशन
मुद्रक : जैना आफसेट

मूल्य : रू0 60 .00

संपर्क संपादक कार्यालय
9810590061

संपादकीय पता
2106- सौलीटीयर टावर,
पेरामाउंट सिम्फनी क्रॉसिंग रिपब्लिक
गाज़ियाबाद 201009

ईमेल - mudra.uvach@gmail.com
mudrarakshas.sahitya@gmail.com

मुद्रक, प्रकाशक स्वामी रोमेल मुद्राराक्षस द्वारा जैना आफसेट प्रिंटर ए-33/2साहिबाबाद औद्योगिक क्षेत्र , साइट 4, गाजियाबाद से मुद्रित एवं , 2106 , सौलीटायर टावर, पैरामाउण्ट सिम्फनी, कासिंग रिपब्लिक , गाज़ियाबाद 201009 से प्रकाशित ।

वर्ष 1 अंक 5
शब्द वृक्ष
मुद्राराक्षस की साहित्यिक पत्रिका
जुलाई - अगस्त २०२४

में इस दफा

सम्पादकीय.....5

कहानी
कोरा पन्ना – रंजना जायसवाल. 7
अपराजिता – हरभजन सिंह मेहरोत्रा. 16
ढोर – अचला नागर 34

शब्द वृक्ष विशेष
जद्दन बाई : लगत करेजवा में चोट-- ज्योत्सना 44
ओसामा बिन लादेन पर रोमी शीराज का आलेख.....29
शब्द वृक्ष पुस्तक वीथिका.....59

फ़ेसबुक प्रपंच – चर्चित फेसबुक पोस्ट संकलन 40

कविता
रिफ़अत 52
आलोक कुमार मिश्र.....54

पुस्तक समीक्षा
उद्भ्रांत और उनकी पत्नी उषा की पुस्तकें 33
कपास – कुबेर दत कौशिक.....15

संस्कृति – उर्मिल रंग उत्सव पर राजवीर रतन 59
मनोविज्ञान की दृष्टी में प्रेम – प्रीति सिन्हा.....56

विशेष

लगत करेजवा में चोट 44

ज़िन्दा है ओसामा बिन लादेन 29

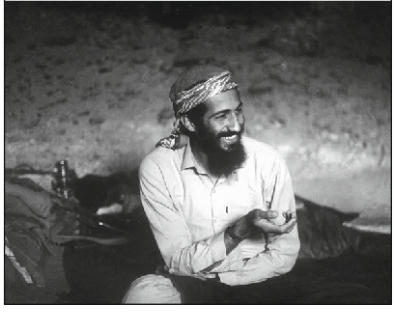

संपादकीय

रोमेल मुद्राराक्षस • ज्योत्सना

जब कोई ऐसा व्यक्ति अचानक छोड़ कर चला जाये, जो दिल के बेहद क़रीब हो और जिसके रहने मात्र से आपको संपूर्णता का एहसास होता हो। ऐसे व्यक्ति के साथ छोड़ जाने का एहसास ठीक वैसे ही ज़हन पर होता है जैसे लकवा मारने के बाद सुई की तेज चुभन भी शरीर को महसूस नहीं होती । बड़े भाई रोमी शीराज़ का यूं अचानक जाना मेरे लिए कुछ ऐसा ही था। रोमी के इस तरह से साथ छोड़ कर चले जाने पर मेरे लिए समझ पाना मुश्किल हो रहा था कि आखिर मेरी आँख इस असीम पीड़ा के बावजूद ज़रा भी गीली क्यों नहीं हो रही। क्यों पलकों के नीचे सूखा सा पड़ गया है ?

रोमी के व्यक्तित्व में बचपन से लेकर आज तक बहुत से गुणों का भंडार देखा मैंने। एक बेहतरीन अभिनेता, एक बेहतरीन लेखक होने के साथ – साथ उसके भीतर एक बेहतरीन इंसान छिपा था । देश भर में घूमना उसका शौक था। वहाँ की खूबसूरत परंपरागत कलाकारी की ना केवल सराहना करना बल्कि वहाँ की बेशक़ीमती कलाकृतियों को ख़रीद कर अपने कमरे में सजाना उसका अनोखा शौक़ था । देश के कोने कोने से लाकर सहेजी गईं उन एंटीक वस्तुओं से उसका कमरा किसी म्यूजियम से कम नहीं नजर आता है। रोमी को अपनी उन सभी चीज़ों से बेपनाह प्यार था । हालाँकि आख़री बार मैं और ज्योत्सना जब उससे मिले तो मुझे ताज्जुब भी हुआ कि उसने अपनी बेशक़ीमती चीज़ों में से एक मुझे और एक ज्योत्सना को पहली बार भेंट की थीं। उस वक़्त वो बीमार था, ऐसे में उसका ये व्यवहार मुझे कुछ अटपटा भी लगा पर खुशी भी हुई। वो रोमी, जो अपनी किसी भी चीज पर हाथ पर नहीं लगाने देता था आज प्यार से खुद गिफ्ट कर रहा था। उस वक्त इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि रोमी ये तोहफा अपनी आखिरी निशानी के तौर पर हमें सौंप रहा है। आज उसको याद करके खुद को इस बात का विश्वास दिलाना पड़ रहा है कि रोमी अब हम सबके बीच नहीं है, लेकिन इसी के साथ उसकी इस पत्रिका को निकालने को लेकर गहरी रुचि और उत्साह शब्द वृक्ष के माध्यम से सदैव उसके साथ रहने का एहसास दिलाता रहेगा....